Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 2, July-2017, ISSN 2230-7540

21वीं सदी के पहले दशक की हिन्दी कविताः परिस्थितियाँ और प्रतिनिधि कवि

Rachna[1]* Dr. Sumitra Chaudhary[2]

[1] Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Research Director, Assistant Professor, Department of Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – *हिन्दी साहित्य में आधुनिक बौद्धिक संवेदना का सूत्रपात करनेवाले रचनाकारों में अज्ञेय का नाम शीर्ष पर है। वे ऐसे अनन्य रचनाकार हैं जो कविता के अलावा उपन्यास, कहानी, यात्रा-वृत्त, डायरी, संस्मरण, निबन्ध, अनुवाद, सम्पादन-संयोजन में ठहराव को तोडकर नयी राहों के अन्वेषी रहे हैं। अपने समय में शायद ही किसी रचनाकार ने साहित्य और कलाओं तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में इतने प्रयोग किए हों जितने अज्ञेय ने। वे मानते रहे: 'प्रयोग' का कोई 'वाद' नहीं है तथापि वे प्रयोगवाद के पुरोधा रहे। हिन्दी-साहित्य का पूरा छायावादोत्तर दौर उनकी प्रयोग-धर्मी अवधारणाओं से बहुत दूर तक प्रेरित प्रभावित हुआ है। 'तारसप्तक' की भूमिका हिन्दी-साहित्य में नवीन अवधारणाओं का घोषणा-पत्र कही जा सकती है जिसने परम्परा, आधुनिकता, प्रयोग-प्रगति, काव्य-सत्य, कवि का सामाजिक दायित्व, काव्य-शिल्प, काव्य-भाषा, छन्द आदि की तमाम बहसों को पहली बार उठाकर साहित्यालोचन को मौलिक स्वरूप दिया। पहले 'प्रतीक' फिर 'नया प्रतीक' तथा 'वा' का सम्पादन करते हुए उन्होंने अनेक नयी प्रतिभाओं को आगे आने का अवसर दिया। अपने परवर्ती अनेक रचनाकारों पर उनका अमिट प्रभाव देखा जा सकता है। अज्ञेय के साहित्य-चिन्तन की सार्थकता इस विचार में है कि वह समकालीन चिन्ताओं, प्रश्नाकुलताओं और चुनौतियों को ही नहीं, नयी सर्जनात्मक सम्भावनाओं की ओर हमें उन्मुख करता है। भारत और पश्चिम के साहित्य-चिन्तन की परम्पराओं पर गहन चिन्तन करने वाले अज्ञेय में एक उजली आधुनिक भारतीयता का निवास है- एक ऐसी भारतीयता जो मानव को स्वाधीन-चिन्तन और मानव-मुक्ति का सन्देश देती है।*

----------X----------

प्रस्तावना

21वीं सदी की हिन्दी कविता की प्रष्ठभूमि में बीसवीं सदी के उत्तरार्ध की हिन्दी कविता है। 21वीं सदी की हिन्दी कविता का आरम्भ 20वीं सदी की हिन्दी कविता के विरासत के रूप में ही हुआ। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि जिन महत्वपूर्ण कवियों ने 21वीं सदी से हिन्दी कविता का परिचय कराया उनकी साहित्यिक पृष्ठभूमि बीसवीं सदी के अन्त में ही बन चुकी थी। अतः 21वीं सदी की आरम्भिक हिन्दी कविता को बीसवीं सदी के अन्त की हिन्दी कविता का ही विस्तार समझना चाहिए। किसी भी युग की परिस्थितियों को रचनात्मक संगति देने में उस देश के व्यक्तियों एवं समाज का हाथ निश्चित रूप से होता है। रचनाकार भी समाज का एक व्यक्ति होने के कारण इस दिशा में सक्रिय रहता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से वह युगीन परिस्थितियों को भी उजागर करता है अर्थात् उसके काव्य में उसका युग बाले ता है। यही कारण है कि किसी युग की परिस्थितियों को जानने के लिए उस युग के साहित्य का अध्ययन आवश्यक हो जाता है और साहित्य के अध्ययन के लिए युगीन परिस्थितियों को जानना अनिवार्यता हो जाती है।

सामाजिक परिस्थितियाँ मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य से पूरे मानव जीवन की कल्पना करना भी अत्यन्त दुष्कर है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ व्यक्ति की जीवन-शैली में भी परिवर्तन आता चला जाता है। पिछले कुछ वर्षों में जीवन के प्रत्येक क्षत्रे में व्यापक परिवर्तन हुआ है। पल-प्रतिपल परिस्थितियों वातावरण का परिवर्तन तथा नये आयामों की स्थापना इस सदी को बीती हुई तमाम सदियों से भिन्न आरै विशिष्ट बनाती है। टूटते परिवार, बड़े होते महानगर, उनकी विभक्त जिंदगियों, औद्योगीकरण, मशीनीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण ने एक अद्भत् शून्यता उत्पन्न कर दी है। आदमी भीड़ में खो गया है। दिशाहीन युवावर्ग बैचेन, रोजगार हीन, चेतनाशून्य और लक्ष्मीहीन होता जा रहा है। आज के समाज में विश्वास का स्थान धोखे और स्वार्थों ने ले लिया है। जिसके कारण लागों में

www.ignited.in

आपा-थापी की पवृत्ति पनपने लगी है तथा लोगेां का जीवन-मूल्यों के प्रति अविश्वास बढ़ने लगा है। आधुनिक मनुष्य पूर्णतः भौतिकवादी हो गया है तथा धर्म में उसकी आस्था नहीं रही है। भौतिकता का प्रभाव बढ़ जाने के कारण इस समय मनुष्य को कुंठा आरै अवसादों ने घरे लिया है। आज के युग में कोइे भी मनुष्य मानसिक रूप से शातं नहीं है।

पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते हएु प्रभाव ने लोगों को भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता से बहुत दूर लाकर खड़ा कर दिया है। ऐसी स्थिति में भारतीय समाज की अपनी संस्कृति के मूल्यों से आस्था उठती जा रही है। आज भारतीय समाज में चारों तरफ अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि का बाले -बाला है।

हमारे समाज में दलित वर्ग, नारी वर्ग तथा कृषक वर्ग का प्रारंभ से ही शोषण होता चला आ रहा है तथा यह क्रम आज भी जारी है। समकालीन दारै में सूचना क्रान्ति, कम्प्यूटर क्रान्ति, मीडिया आदि के कारण समाज में पर्याप्त मात्रा मे बदलाव आया है। एक आरे शिक्षा का प्रसार बढ़ा है तो दसूरी ओर जनसंख्या में वृद्धि होने के कारण शैक्षणिक बेरोजगारी भी बढ़ी है। एक आरे प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हुई है तो दूसरी आरे महंगाई में भी बढ़ोतरी हुई है। एक आरे विभिन्न योजनाओं व आंदोलनों के कारण महिलाओं व दलितों की स्थिति में सुधार हुआ है तो दूसरी आरे सामाजिक समानता का स्वप्न अभी पूरा नहीं हो पाया है। एक आरे वैश्वीकरण के कारण सारा विश्व ग्राम की भूमि ले रहा है तो दूसरी आरे आपसी द्वेश, साम्पद्रायिकता, अलगाव आदि के कारण व्यक्ति-व्यक्ति के बीच आत्मीय दूरी बढ़ गई है।

स्त्री शिक्षा ने जहाँ स्त्री की आत्मनिर्भरता का मार्ग प्रशस्त किया है वहीं नवीन समस्याएं भी उभर कर आ रही हैं मीडिया ने समाज के स्वरूप को ही बदल दिया है। शिक्षित युवावर्ग राजे गार न मिलने के कारण हताश दिखाई दे रहे हैं। यदि आय में कहीं बढ़ोतरी हुई है तो महंगाई डायन भी पीछे पड़ी है।

विभिन्न याजे नाओं के कारण महिलाओं व दलितों की स्थिति में सुधार हुआ है तो जागरूक वर्ग में विरोधाभास भी बढ़ा है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति ने जितना विकास किया है उतनी ही समाज में समस्याएं भी उत्पन्न हो रही हैं। इक्कीसवीं सदी के इस दारै में सूचना तंत्र के हर क्षण बदलते, विकसित होते अविष्कारों के बीच समाज का स्वरूप बदल रहा है। मानवीय संवदेना कम होती हुई शून्य की आरे बढ़ रही है। जिसका असर पराम्परागत मूल्यों और सामाजिक मान्यताओं पर पड़ गया है। व्यक्ति के सरोकारों, दिनचर्या, मनारेंजन आदि को संचार माध्यम नियंत्रित कर रहा है। बाजारीकरण और वैश्वीकरण के युग में हरेक व्यक्ति की जीवन-शैली बदल गई है।

आर्थिक परिस्थितियाँ

भारत एक संवैधानिक देश है आरै संविधान के अनुसार देश के सभी नागरिकों को आर्थिक आत्मनिर्भरता प्रदान करने हतेु शासन के नए तंत्र का गठन हुआ। देश के आर्थिक विकास की दृष्टि से पंचवर्षीय योजनाओं का सूत्रपात हुआ। 1951 में आर्थिक नियोजन की यह प्रक्रिया आरम्भ हुई। अब तक कई पंचवर्षीय याजे नाएं बन चुकी हैं। इन याजेनाओं के द्वारा आर्थिक क्रियाओं को इस प्रकार नियंत्रित किया गया कि निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करके भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके। सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों में बड़े तथा छोटे उद्योगे का विकास हुआ। बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ, उत्पादन के साधनों में वृद्धि हुई।

भारत एक ग्रामीण प्रधान देश है। देश में आर्थिक नीति को सफल बनाने के लिए सबसे पहले ग्रामीण समाज की मुख्य समस्याओं के निराकरण हेतु अनेक योजनाएं चला रखी हैं- सामुदायिक विकास योजना, सघन कृषि कार्यक्रम, अधिक उपज देने वाले बीजों का कार्यक्रमों, आदिवासी विकास योजना, ग्रामीण रोजगार का पारित कार्यक्रम, अन्त्योदय कार्यक्रम, ग्रामीण युवा स्वराजे गार प्रशिक्षण कार्यक्रम, बीस सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रम, भूमिहीनों के लिए राजे गार गारन्टी कार्यक्रमों आदि। आधुनिक युग में आर्थिक दृष्टि से सर्वाधिक चिन्तनीय विषय मध्यम वर्ग की स्थिति रही है। मध्य वर्ग साधनों के अभाव के कारण उच्च वर्ग की बराबरी तो कर नहीं सकता और अपने अहम् के कारण निम्न वर्ग जैसा जीवन भी व्यतीत नहीं कर सकता। उच्च वर्ग से बराबरी की चाह में मध्यम वर्ग के लागे अधिकाधिक अर्थ-संग्रह पर बल देने लगे फलस्वरूप महिला वर्ग का रूझान नाकै री की आरे बढ़ने लगा और पुरुष वर्ग रिश्वतखोर एवं भ्रष्टाचारी होता चला गया। ठीक इसी प्रकार राजनीति में भी भ्रष्टाचार और रिश्वत को स्थान मिला। वैज्ञानिक आविष्कारों के विकास के फलस्वरूप बड़े-बडे उद्योगां की स्थापना को बढ़ावा मिला है, साथ ही लघु उद्योगों को बचाने की कोशिश की जा रही है। इतना विकास हो जाने के बाद भी निम्न व मध्यम वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर ही है। मजदूर और किसानो की दशा में कोई बदलाव नहीं आया है। पूजीपति वर्ग समाज का अधिक से अधिक शोषण कर अपनी स्थिति को आरे समृद्ध करने में लगा रहता है।

साहित्य की समीक्षा

कविता के बाह्य रूप और नाम में भी युग के अनुकूल परिवर्तन आए हैं। भिन्न समय पर विभिन्न विमर्शनासंपन्नों ने अपने

www.ignited.in

अपने विचारानुसार नयी कविता की अनेक परिभाषाओं को घोषित किया है।

देवेश ठाकुर (2013) का चिंतन है कि 'वैसे तो प्रयोग सभी कालों में होते रहे हैं और प्रयोगों की प्रवृत्ति शाश्वत है।' क्योंकि, इस में प्राचीन तथा पूर्ववर्ती कविता की तरह रागात्मक अनुभूति के मूल हैं, कल्पना के कोमल दलों के फूल हैं, विचारों की ऊँची बेल का चढ़ाव है तथा अभिव्यंजनामाधुर्य का मादक सौंदर्य नयी कविता और उसकी पूर्ववर्ती कविताओं में कोई अंतर है तो वह केवल कविता की बाह्य रूपरेखा में, क्योंकि नयी कविता स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत लाक्षणिक एवं प्रतीकात्मक शैली में लिखी गई है, जिसमें वैयक्तिकता तथा विचारात्मकता का प्राधान्य है।

डॉ. जगदीश गुप्त ने कहा है, (2016) 'नयी कविता समसामायिक हिंदी काव्यधारा की प्राय: सर्वाधिक स्वीकृत अभिधा है, उसने उदार बाहें फैलाकर प्रगतिवाद व प्रयोगवाद दोनों की यथार्थोन्मुखी चेतना को उन्मुक्त हृदय से अपने में समाहित कर लिया हैं।' नंददुलारे वाजपेयी के अभिमत में श्नई कविता का आंदोलन प्रयोगवाद के नाम से हिंदी साहित्य में अभिहित हुआ था तथा नई कविता के आरंभिक संग्रहों में दोनों प्रकार के कवि, प्रगतिवादी और प्रयोगवादी, सम्मिलित किए गए थे।

उन्होंने बच्चन की संवेदना और शिल्प के स्तर पर नवीनता को देख कर बच्चन को ही नयी कविता का प्रारंभकर्ता माना है। इससे एक बात तो निर्धारित हो जाती हैय नयी कविता पर सप्तकी परंपरा का कोई आधिपत्य नही है। नयी कविता कहलाने के लिए कविता में नवीनता का होना जरूरी है।

डॉ. राम दरश मिश्र (2013) ने नयी कविता तथा प्रयोगवादी कविता को एक ही माना है, 'नयी कविता लिखने वाले जो कवि हैं, उनमें से अधिकांश अच्छे कवि प्रयोगवाद तथा प्रयोगवाद के खेमों में रह चुके हैं और उन खेमों की सीमाओं से अवगत होकर दोनों किसी खुले क्षेत्र में आने को आकुल थे। नयी कविता दोनों के लिए सामान्य भूमि के रूप में प्राप्त हुई।

इसी प्रकार अनेक चिंतकों ने नयी कविता का संबंध प्रगतिवाद और प्रयोगवाद से जोड़ा है। छायावादी कविता में भी अनेक नवीनताएँ नजर आती थी, किंतु छायावाद में पलायनवादी विचार अधिक नजर आ रहे थे और प्रगतिवाद से प्रारंभ होकर नयी कविता तक कवियों में कर्तव्यबोध और क्रांतिकारी भावनाएँ बढ़ती गईं।

नयी कविता की विचारधारा प्रगतिवाद की विचारधारा से अधिक भिन्न नही है। कुँवर नारायण की मान्यता के अनुसार, (2016) 'नयी कविता ऐतिहासिक उपलब्धि है।

वी. नारायण कुट्टी के अनुसार (2017), 'नयी कविता के प्रवर्तन के संबंध में यह प्रतीत होता है कि नयी कविता वर्षों वर्षों के विचार मंथन, अनेक कवियों की अविराम साधना और आलोचना क्षेत्र की निरंतर एवं गंभीर चर्चा की उपलब्धि है।

वास्तव में जब कवि महसूस करता है कि प्रचलित 'प्रामाणिक रूढ़ियाँ' या 'काव्य सिद्धांत' अपनी अनुभूतियों को कविता रूप देने में असमर्थ हैं या कमजोर लगते हैं तब वह नयी नयी विधाओं की तलाश में प्रयोग करता है। कुछ प्रयोग इतने सफल हो जाते हैं कि उनका आयाम दीर्घकालीन हो जाता है। कुछ प्रयोग इतने कमजोर निकलते हैं कि प्रथम प्रवर्तक ही उस प्रयोग को हटा देता है। प्रगतिवादियों की मार्क्स, रूस, चीन, लाल झंडा आदि शब्दों के बाहुल्य से हट कर प्रयोगवाद अपने नये नाम से नयी कविता के रूप में आगे बढ़कर अब उन क्षेत्रों का अन्वेषण करने लगा, जिन्हें अभेद्य मानकर छुआ नहीं गया है। नयी कविता ने प्रगतिवादियों के विचारों को अपनाया है, परंतु उसी से तृप्त नहीं हुई, नये यथार्थों की खोज में लगी रही। इतिहास के साथ साथ नयी कविता में अनेक नये शब्द और अर्थ जुड़ते चले गये।

डॉ. इंद्रनाथ मदान के अनुसार (2015) प्रयोगवाद गतिशील हो कर नयी कविता में विकास पाने लगा। विदेशी कवियों की चाल को, विदेशी चिंतकों के विचारों को ही अपना कर चलना गतिशीलता है तो नयी कविता गतिशील हो चुकी है।

नयी कविता में कवि अपने प्रतीकों को अस्पष्ट रूप में प्रयोग करता चला है। इससे पाठक को कविता के अर्थ को पाने में कठिनाई जरूर हो रही है, और कविता के पाठक भी कम होते चले हैं। यह एक कड़वा सच है।

डॉ. त्रिभुवन सिंह (2011) के शब्दों में आधुनिक हिंदी काव्य में विभिन्न वादों की धूम सी मच गई और एक निश्चित काव्य परंपरा खड़ी भी नहीं हो पाई थी कि दूसरों ने उसका गला दबाकर उठ खड़ी होने कि चेष्टा की। नव स्वच्छंदतावाद प्रौढ़ता की ओर बढ़ ही रहा था कि प्रगतिवाद ने उसे धर दबाया, क्योंकि छायावाद काल में ही उसके अंकुर कठोर हो चुके थे और वह भी पूर्ण जवान नहीं हो पाया था कि प्रयोगवाद आ धमका। प्रयोगवाद कूड़ा करकट इकट्ठा करके हरियाली का स्वप्न देखने का उपक्रम कर ही रहा था कि अनुकूल भूमि पाकर नयी कविता का स्रोत फूट निकला था।

निष्कर्ष

यह पृष्ठों में चलने वाले तर्क के योग के दोहराव और कम करने वाले अभ्यास को दर्शाता है। तुलनात्मक अध्ययनों में कटौतीवाद का यह खतरा अधिक स्पष्ट हो जाता है जहां अध्ययन के द्विआधारी घटकों के बीच अंतर समानता सूक्ष्म और ठीक होती है। इसलिए ष्सह आलोचनात्मक आलोचना में एक सच्चे संचालक की परीक्षा टी मदनिस डिस के बारे में जल्दबाजी के खतरों को दूर करने की क्षमता नहीं है- साहित्यिक कार्यों में उकसाने वाली आयतें, लेकिन उनकी एक समानांतर तरीके से समानताएं या विरोधाभासों, को ध्यान में रखते हुए अत्यधिक सावधानी। इसलिए वर्तमान अध्ययन में निष्कर्ष एक औपचारिक आवश्यकता के रूप में है (गलत-) बस फिर से राज्य करने के लिए और वैचारिक ध्दार्शनिक मतभेदों को फिर से खुलना कविता की तुलना में दोनों के नायक के बीच सांस्कृतिक धारणा के अलग-अलग स्तर। यहां निष्कर्ष भारतीय कविता की दो धाराओं के बीच अंतर के लिए जिम्मेदार संभावित कारणों पर विचार करने के लिए एक अवसर प्रदान करने के माध्यम से अध्ययन को आगे बढ़ाता है।

आधुनिक भारतीय अंग्रेजी कविता के नायक के पश्चिम-झुकाव का कारण पूरी तरह से समझने योग्य है कि पहचान करने के लिए इतना दूरस्थ या अस्पष्ट नहीं है। अपने स्वदेशीकरण के सभी हालिया प्रयासों के बावजूद, अंग्रेजी न केवल संरचनात्मक, सौंदर्य और सांस्कृतिक रूप से हिंदी और अन्य भाषा से अलग भाषा हैय यह पराया भी है। और आगे यह केवल विदेशी नहीं है, यह औपनिवेशिक भी है। इन विशेषताओं के साथ, अंग्रेजी में भारत में कविता के माध्यम के रूप में इसकी उपयुक्तता के संबंध में अंतर्निहित सीमाएं हैं। विदेशी भाषा और देशी अनुभव का संकरण केवल देशी के एक कैरिक्युट्रिएशन पर सीमाबद्ध हास्यास्पद सांस्कृतिक विकृतियां उत्पन्न कर सकता है। और (भारतीय अंग्रेजी) कवियों के मामले में, जो मानते हैं कि कविता भाषाई चालाकी के लिए सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण है, की सूक्ष्म बारीकियां। देशी सांस्कृतिक अनुभव (ओं) विदेशी भाषाई 'आदेश' के अत्याचार के शिकार हैं। ऐसी कविता पश्चिम द्वारा अपनी भाषाई उपलब्धि में प्रमाणित और प्रमाणित होती है।

एक आधुनिक भारतीय अंग्रेजी कवि की अतिरिक्त-सामान्य भाषाई चिंता किसी भी संदेह से परे है। वह 'शब्द' के बाद लटके हुए हैं: सर्वश्रेष्ठ कवि शब्दों का इंतजार करते हैं। ('कवि, प्रेमी, बर्डवॉचर', सीपी, पी। 1535)। 'सटीक नाम': 3 की खोज उनके काव्य अभ्यास के मूल सिद्धांत का गठन करती है। रामानुजन ने अक्सर मजाक में कहा कि कविताएँ बच्चों की तरह थीं, वे खुद को गंदा करते थे और उन्हें उन्हें साफ करना था। उन्होंने कहा कि उन्हें कविताओं के एक सेट को खत्म करने में दस साल लग गए। महापात्रा भी, के साथ शुरू करने के लिए, भाषा के अधिक मोहक थे। समकालीन भारतीय अंग्रेजी कवियों में से अधिकांश के लिए, कविता लिखना एक सचेत अभ्यास है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आर्लिंगटन: टेक्सास विश्वविद्यालय, 1977. भाभा, होमी के एड राष्ट्र और कथन, लंदन और न्यूयॉर्क रूटलेज, 1990

2. Bhahari, डॉ हरदेव A Shiksharthi हिन्दी Sabdakosh A दिल्ली: राजपाल एंड संस, 1990. भटनागर, डॉ. राजेंद्र मोहन, डॉ. लोहिया: व्यकितत्व और कृतित्वा।

3. नई दिल्ली: किताब घर, 1990. बिजल्वान, सीडी इंडियन थ्योरी ऑफ नॉलेज बेस्ड, पर जयंत के Nvavamanianri

4. नई दिल्ली: विरासत प्रकाशक, 1977 Birje, पाटिल, जे 'आंतरिक Candences: के काव्य Nissim ईजेकील', साहित्यिक मानदंड, बारहवीं, 2 और 3, 1976, ब्रैडबरी, एम। और जेम्स मैकफर्लेन, एड

5. आधुनिकता 1890-1930, पेलिकन गाइड ससेक्स: द हार्वेस्टर प्रेस, 1978. ब्रेख्त, अर्नोल्ड, राजनीतिक सिद्धांत: बीसवीं शताब्दी की नींव। दिल्ली: सुरजीत प्रकाशन, 19 Public 9।

6. भारतीय पुनर्मुद्रण, बुल्के, सी. एन एंगिश-हिंदी शब्दकोश, नई दिल्ली: एस चंद एंड कंपनी, 1988. बैल, एलन और ओलिवर स्टैलब्रस, संस्करण।

7. फॉन्टाना डिक्शनरी ऑफ मॉडर्न थॉट, लंदन: फोंटाना प्रेस, 1977. कैरोल, डेविड, एड, 'थ्योरी' के राज्य:

8. इतिहास, कला और महत्वपूर्ण प्रवचन, कैलिफोर्निया: स्टैनफोर्ड यूनिव। प्रेस, 1994. चाको, पीएम 'ईजेकील की पारिवारिक कविताएं', हिंदी में भारतीय पत्रकारिता पत्रिका। 14, 2

9. चंद्र, सुधीर। द प्रेजेंटेटिव प्रेजेंट, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1992. चंद्रमोहन एट अल, एड

www.ignited.in

10. तुलनात्मक साहित्य के पहलू: वर्तमान दृष्टिकोण, नई दिल्ली: भारतीय प्रकाशक और वितरक, 1989

11. चारी, वीके भक्ति और छवि पूजा, द अडयार लाइब्रेरी बुलेटिन, वॉल्यूम 59.1995। संस्कृत आलोचना। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स, 1993

12. चटर्जी , पार्थ। राष्ट्रवादी विचार और औपनिवेशिक दुनिया। दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1986. चतुर्वेदी, जगदीश, एड। निट्ठ। दिल्ली: ज्ञान भारती प्रकाशन , 1972।

13. चेल्या, जेवीत्र, पट्टुपट्टू: दस तमिल आइडिल्स, तंजावुर: तमिल विश्वविद्यालय तंजावुर, 1985. चौधुरी, इंद्र नाथ

14. तुलनात्मक भारतीय साहित्य: कुछ परिप्रेक्ष्य, नई दिल्ली: स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा। लिमिटेड 1992

Corresponding Author

Rachna*

Research Scholar, PhD in Hindi, OPJS University, Churu, Rajasthan